OM-2- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/03/2021 6:18 PM Page 10

इतना शक्तिशाली व्यक्तित्व जिसने भगवान को सम्भाला

ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

इतना शक्तिशाली व्यक्तित्व जिसने भगवान को सम्भाला, उसको अपने दिल में उतारा। हमारी अति आदरणीय, मीठी फरिश्ता स्वरूप, हृदय को मोहने वाली, सहनशीलता की मूर्ति, दिव्यता की खान, दादी जी के बारे में जितना कुछ कहा जाये उतना कम है। वो दिलाराम की दिलरूबा है। सच में परमात्मा का रथ बनना दुनिया का सबसे बड़ा भाग्य माना जायेगा। इन्होंने समाज के उस गरिमामयी स्थिति को प्राप्त किया, जिसको इतनी तपस्या के बाद ऋषि-मुनि भी प्राप्त नहीं कर सकते।

मात्र 8 वर्ष की आयु में जब इस ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में आये और धीरे-धीरे इस ज्ञान की गहराई को समझा और पूरी तरह से इस संस्था के साथ जुड़ीं और यहाँ की गतिविधियों को आगे बढ़ाया, लेकिन साथ-साथ सही मायने में बात को समझाने के लिए वो भी परमात्मा की बात एज़ इट इज़ समझाने के लिए वह निमित्त बनीं और सभी के लिए एक प्रेरणा स्रोत भी बनीं। कहा जाता है कि परमात्मा इतना आसानी से तो किसी को नहीं चुनेगा अपने लिए, निश्चित रूप से उस आत्मा के अन्दर बहुत बल होगा। बहुत ताकत होगी। आने वाली दुनिया में निश्चित रूप से सबकुछ बदलेगा। वो तो ये कहेंगे कि ये तो भविष्य की जीवन्त कल्पना है, लेकिन सच में ये होने ही वाला है। उसका स्वरूप अगर किसी ने देखा तो वो हैं हमारी दादी जी। कहा जाता है कि गीता श्री कृष्ण ने सुनाई। लेकिन एक छोटा बच्चा जो इतना आकर्षक है और वो ज्ञान की चर्चा करेगा, कोई ऐसी अच्छी-अच्छी बातें करेगा तो आपको उसकी बातें मन मोहक लगेंगी और आप बड़े ही भाव से, बड़े ही प्यार से उसको सुनेंगे कि बच्चा तो बहुत अच्छी-अच्छी बातें कर रहा है। बड़ी-बड़ी बातें कर रहा है, लेकिन उन बातों को फॉलो करना आसान नहीं है। इसी तरह से जब कोई बुजुर्ग कोई बात कहता है जिसने

उस चीज़ को धारण किया, इतने साल का अनुभव है उसके साथ, तो उस अनुभव को, उस बात को सुन कर उस बात को निश्चित रूप से उसे करने का मन करेगा। उन्होंने इतने समय से तपस्या करके इस बात को अपने अन्दर धारण किया, तो सहज रीति से, सहज भाव से इन आत्माओं ने इस ज्ञान को अपने अन्दर रचा, बसा लिया और कहने में इस बात को बिल्कुल भी अन्दर से हिचक नहीं है, बेहिचक, बेझिझक इस बात को आपके सामने रखा जा सकता है कि सचमुच में अगर सम्पूर्ण पवित्रता की मूर्ति अगर देखना है तो हमारी सभी दादियां तो निश्चित रूप से हैं ही लेकिन विशेष रूप से दादी हृदयमोहिनी(दादी गुल्ज़ार) एक फरिश्ता, एक उड़ता हुआ फरिश्ता कह सकते हैं जिसने अपने आपको सबके सामने निर्संकल्प अवस्था में रखा। निर्संकल्प अवस्था इस तरह से कह सकते हैं कि जो निरन्तर परमात्मा की याद में रहता है उसके व्यर्थ की सोच, व्यर्थ की बातें बंद हो जाती हैं। वो हमेशा कुछ अलग सोचता है, कुछ अलग करता है, कुछ अलग तरीके करवाता भी है तो ऐसी धैर्यता, नम्रता और पवित्रता की मूर्ति सरलता मधुरता और दिव्यता की मूर्ति हमारी अथक और हर्षितमुख दादी गुल्ज़ार जी ने बहुत सालों तक बहुत ही अच्छी पालना दी।

हम सबका जो इस ब्रह्माकुमारीज़ में आने का जीवन है चाहे वो किसी का दस साल का है, पंद्रह साल का है जो दादी से मिले या जो नहीं भी मिले लेकिन अव्यक्तमूर्त मात-पिता जो हमारे परमपिता परमात्मा शिव बाबा हैं उनके महावाक्यों को आज भी वीडियो के माध्यम से या ऑडियो के माध्यम से सुनते हैं, तो लगता है कि इस रथ के अन्दर कितनी पावनता होगी जो परमात्मा ने उसे चुना, और हम सबके समक्ष रखा। समाज की एक-एक छोटी इकाई को भले दादी जी ने नहीं देखा हो, समाज में इतने नहीं रहे हों जैसे दुनिया में लोग रहते हैं, लेकिन जब ये ज्ञान सुनाते थे तो लगता नहीं था कि उन्होंने कभी उस दुनिया को देखा नहीं हो। उस दुनिया को भी देखा और उस दुनिया में रहने वाले लोगों को भी अनुभव किया, लेकिन सूक्ष्मता के साथ और वही सूक्ष्मता की गहराई हम सबके समक्ष वे रखती थीं और एक बात सदा कहती थीं कि सोचो आपके दिल में कचरा हो और उसमें आप किसी को बिठाना चाहो तो क्या कोई बैठेगा? उसी प्रकार वो कहती थीं कि अगर हमारा मन गंदा है तो उसमें परमात्मा कैसे बैठेगा! ऊपर से कोई कचरा डाल दे, कैसा लगेगा! तो दिल और मन जब साफ होगा तब परमात्मा भी हमारे साथ होगा। ये दादी निरन्तर हम लोगों से क्लासेस में कहती थीं। और अभी भी उनकी जितनी भी बातें हैं वो कहानियां और कहावतें नहीं बनेंगी, निश्चित रूप से उसका स्मारक स्थल और ऐसी चीज़ें बनाकें भी हम अगर चाहें तो श्रद्धाजंलि देना तो उनको नहीं दे सकते। उनकी हर एक बात धारणा करने की है। उनकी हर एक बात में उनका अपना व्यवहार, अपनी दिव्यता झलकती है, तो आने वाला समय निरन्तर दादी जी को निर्संकल्प अवस्था और अंतमुर्खता के लिए बहुत अच्छी तरह से याद करेगा और आज भी पूरा ब्राह्मण परिवार जो ब्रह्माकुमारीज़ को फॉलो करने वाले बाबा के बच्चे हैं वो सभी भी श्रद्धा सुमन इसी हिसाब से दादी जी को अर्पण कर रहे हैं। तो ऐसे दादी को हम सबका दिल से शत-शत नमन।

प्रश्न : मेरा नाम तुलाराम है। मैं किसी भी कार्य में दृढ़ नहीं रह पाता, तो अपने किसी भी कार्य में दृढ़ता लाने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर : कई मनुष्य बचपन से ही थोड़ा सुस्त होते हैं। लेकिन हरेक मनुष्य को ये आदत डाल लेनी चाहिए कि आज का काम आज की कर लेना है। अपनी दिनचर्या को, अपने कार्य को अच्छे से मैनेज कर लेना चाहिए। इसमें सबसे पहले तो मनुष्य को अपने संकल्पों में चेंज लाना चाहिए। इसमें अच्छे स्वमान की प्रैक्टिस की ज़रूरत है ताकि उसमें बोल्डनेस आये। जैसे मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं बहुत महान हूँ, मुझे बड़े-बड़े कार्य करने हैं। पढ़ाई में ये हमेशा लक्ष्य रखें कि अगर मार्क्स 60 प्रतिशत आते हैं तो मुझे 70 प्रतिशत लाने हैं, तो एक अच्छा लक्ष्य बना लेने से जीवन का, ये दृढ़ता आती रहेगी। और ये निश्चितता लायें कि मुझे आज इतने समय में ये कार्य पूर्ण करना ही है। इससे स्पीड बढ़ेगी और संकल्प एकाग्र होंगे उस कार्य के लिए। इसलिए स्वमान का अच्छे से अभ्यास करें। इसकी प्रैक्टिस रोज़ करेंगे तो दृढ़ता आने लगेगी।

प्रश्न : मेरा नाम अंकित है। जिस किसी को भी देखें मन-बुद्धि उसकी तरफ न जाये उनसे रिलेटेड पास्ट के थॉट न आयें, उसके लिए हम क्या करें? क्योंकि पास्ट में हुई बातें जब याद आती हैं तो बाबा भूल जाता है।

उत्तर : निःसन्देह इससे बचना परमआवश्यक है। वरना हमारी मानसिकता जो है वो निगेटिव होने लगेगी। और हमें पास्ट में रहने की आदत ही पड़ जायेगी। और हम न तो अपने वर्तमान को अच्छा बना सकेंगे और न भविष्य को सुन्दर बना सकेंगे। इसलिए शिव बाबा ने अपना ज्ञान देते हुए बहुत समझाया कि पास्ट इज़ पास्ट। फुल स्टॉप लगा दो। अब तुम भी अज्ञान में थे। वो भी अज्ञान में था। तुम भी किसी विकार के वश थे और वो भी किसी विकार के वश था। विकारों के वश दोनों से कुछ गलतियां हुई हैं व्यवहारिक। अब ज्ञानी बन गए। अब तुम्हारा कर्त्तव्य है सबको आत्मिक दृष्टि से देखना। सभी आत्मायें हैं, चमक रही हैं। सभी बहुत अच्छे हैं। इस फीलिंग से देखेंगे ना तो इसे कहते हैं वृत्ति का निर्माण करना। हमारी फीलिंग्स जो दूसरों के लिए हैं, हमारा एटीट्यूड जो दूसरों के लिए है उसको वृत्ति कहते हैं। पास्ट में जो भी हुआ पास्ट इज़ पास्ट। पास्ट में इन्होंने मेरे साथ जो भी बुरा किया हो लेकिन मुझे इनके साथ अच्छा करना है। तो इस तरह के चिंतन से पास्ट विस्मृत होता जायेगा।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : मैं एक कुमार हूँ। मुझे जल्दी ही तनाव आ जाता है। मुझे अब ज्ञान लेने के बाद यह स्थिति अच्छी नहीं लगती। मैं खुशनुमा जीवन जीना चाहता हूँ। कृपया सहज उपाय बताएं?

उत्तर : छोटी-छोटी बातों में तनाव होना - यह कमज़ोर मन की निशानी है। आप योगाभ्यास कर स्वयं को पावरफुल बनायें। हर बात को सहज रूप से लें। जीवन में हमें उन बातों को स्वीकार कर लेना चाहिए, जिन्हें हम बदल नहीं सकते। उन्हें स्वीकार करके चित्त को शांत करें।

हर बात में तुरंत रियेक्ट(प्रतिक्रिया) न करें। आपको थोड़ा-सा धैर्य चित्त बनने की आवश्यकता है। अब आपने ज्ञान लिया है स्वयं में ज्ञान का बल भरें। ज्ञान सुनना एक बात है और स्वयं में ज्ञान का बल भरना महत्वपूर्ण बात है। ज्ञान का बल ज्ञान चिंतन से आता है और ज्ञान चिन्तन होता है ज्ञान सिमरण से। एक बात पक्की कर दें कि दूसरे लोग वैसा ही नहीं करेंगे, जैसा हम चाहते हैं।

प्रश्न : मैं अधरकुमार हूँ। मुझे पवित्र बनने की बहुत इच्छा है परन्तु माया बनने नहीं देती। मेरा योग भी नहीं लगता। कृपया विधि बतायें।

उत्तर : जन्म-जन्म की वासनाएं, अब मनुष्य को पवित्र बनने नहीं देती। भगवान को तो पवित्रता ही प्रिय है। उनकी आज्ञा है, काम महाशत्रु है। गीता में भी महावाक्य हैं - जो मनुष्य काम व क्रोध के वेग को सहन करने में समर्थ हैं, वही सच्चा योगी है। आपको योगी भी बनना है व पवित्र भी। दोनों का गहरा नाता है। बिना पवित्रता के कोई योगी बन नहीं सकता व बिना श्रेष्ठ योग के सम्पूर्ण पवित्रता का बल प्राप्त नहीं होता। आपको क्या करना है सारे दिन में पच्चीस बार याद करना है- मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं महान आत्मा हूँ। सवेरे उठते ही दस बार याद करना है मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मायाजीत हूँ, विजयी रत्न हूँ।

सारे दिन में दस बार एक-एक मिनट स्वयं को देह से न्यारा आत्मा समझना अर्थात् अशरीरीपन का अभ्यास करना है। भोजन खाते व पानी-दूध पीते उसे दृष्टि देकर सात बार संकल्प करना है कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। भोजन बीस प्रतिशत कम कर दीजिए। बस इस तरह शीघ्र ही आपमें पवित्रता धारण करने की शक्ति आ जाएगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com